समूह के कार्य (Function of Group)

विभिन्न समूह अपने सदस्यों के लिए भिन्न भिन्न तरह के कार्य करता है। इन समूहों के कुछ सामान्य कार्यों का वर्णन निम्नांकित है —

* समूह सदस्यों के आवश्यकताओं की संतुष्टि — समूह अपने सदस्यों की आवश्यकताओं को संतुष्ट करने का कार्य करता है। समूह में सदस्य दो प्रकार के होते हैं — प्रभावी एवं महत्वपूर्ण सदस्य तथा अप्रभावी एवं साधारण सदस्य। प्रभावी सदस्य समूह से संबंधित सभी महत्वपूर्ण निर्णय लेते हैं और उच्च पदों पर होते हैं। जबकि अप्रभावी सदस्य प्रभावी सदस्यों के द्वारा लिए निर्णयों का अनुपालन एवं सहयोग करते हैं। जैसे — किसी विश्वविद्यालय में कुलपति, कुलसचिव आदि प्रभावी सदस्य एवं लिपिक साधारण सदस्य के उदाहरण होंगे। समूह प्रभावी सदस्यों के सभी महत्वपूर्ण तथा साधारण सदस्यों के प्राथमिक आवश्यकताओं जैसे — भोजन, कपड़ा, मकान आदि की पूर्ति करने की कोशिश करता है। इस तरह समूह अपने सदस्यों के आवश्यकताओं की पूर्ति समान रूप से न कर विभिन्न रूप से करता है।

* आधिपत्य एवं अपनेपन की आवश्यकताओं की संतुष्टि — जब व्यक्ति किसी समूह का सदस्य बनता है, तो उसकी सिर्फ आर्थिक आवश्यकताओं की ही संतुष्टि नहीं होती है, बल्कि अपनेपन एवं आधिपत्य की आवश्यकता की भी संतुष्टि होती है। आधिपत्य आवश्यकता व्यक्ति में समूह का एक महत्वपूर्ण सदस्य होने की भावना को तीव्र करता है, जिससे उसे संतुष्टि मिलती है। ऐसे व्यक्ति समूह में अपनी सक्रिय भूमिका निभाते हैं और नेता के रूप में उभरते हैं। समूह में सदस्यों के अन्य अपनेपन की आवश्यकताओं की भी संतुष्टि होती है और सदस्य एक दूसरे से अधिक निकटता महसूस करते हैं। बैरोन एवं बर्न (1977) के अनुसार — "अपनेपन की आवश्यकता (belongingness need) की पूर्ति होने से समूह का कार्यक्षेत्र एवं आकार में तेजी से वृद्धि होती है तथा सदस्यों की प्रतिष्ठा एवं सम्मान ऊँचा हो जाता है।"

Scanned with CamScanner

* नई आवश्यकताओं का निर्माण - एक व्यक्ति अपनी विशेष आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किसी समूह से जुड़ता है, तो इससे उसके ये विशेष आवश्यकताओं की पूर्ति तो हो जाती है, साथ ही कुछ नयी आवश्यकताओं का भी सृजन हो जाता है। इन नयी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए व्यक्ति समूह का अधिक क्रियाशील सदस्य बनने का प्रयास करता है। इससे यह ज्ञात होता है कि समूह की स्थिति तो सुदृढ़ होती ही है, उसके क्रियाकलाप भी विस्तृत हो जाते हैं। जैसे यदि कुछ लोग अपनी विशेष आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु एक राजनीतिक पार्टी बनाते हैं, तो इसके साथ ही कुछ नयी नयी आवश्यकताएं जैसे - समूह को आकर्षक एवं लोकप्रिय बनाना, समूह की सदस्यता बढ़ाना आदि उत्पन्न हो जाती हैं। जिसकी पूर्ति हेतु समूह का प्रत्येक सदस्य अधिक क्रियाशील भूमिका निभाता है।

* व्यक्ति का समाजीकरण — समूह व्यक्ति के समाजीकरण का कार्य भी करता है। विभिन्न सामाजिक समूह जैसे - परिवार, स्कूल कॉलेज, खेल का समूह, धार्मिक समूह, राजनैतिक समूह आदि व्यक्ति के समाजीकरण में प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से मदद करता है। जब कोई व्यक्ति ऐसे समूहों से जुड़ता है, तो वह अपना व्यवहार इन समूहों के मानदण्डों के अनुसार परिवर्तित करता है तथा उससे कुछ सीखता है, जिससे व्यक्ति का समाजीकरण होता है। उसी तरह यदि व्यक्ति किसी असामाजिक समूह जैसे - बदमाशों का समूह, चोरों का समूह आदि से जुड़ जाता है, तो उसका असमाजीकरण हो जाता है और वह असामाजिक व्यवहार सीख जाता है।

* सांस्कृतिक निरन्तरता को बनाये रखना — समूह सांस्कृतिक निरन्तरता को बनाये रखने में भी अहम भूमिका निभाता है। प्रत्येक समूह की अपनी कुछ विशेषताएँ, मूल्य, मानदण्ड, परंपराएँ, प्रथाएँ आदि होती हैं, जिनपर उनकी संस्कृति का स्पष्ट प्रभाव होता है। समूह सदस्यों के व्यवहारों पर इन मूल्यों, परंपराओं, प्रथाओं आदि का काफी प्रभाव रहता है, जिससे सांस्कृतिक निरन्तरता बनी रहती है।

NOTES

WK 08 • 054-311

23 FEBRUARY SATURDAY

APPOINTMENTS

एक से अधिक समूह की सदस्यता — समूह अपने कुछ सदस्यों को विशेषकर साधारण सदस्यों को अप्रत्यक्ष रूप से दूसरे समूह या समूहों का सदस्य बनने के लिए जो कुछ कारणों से प्रेरित करता रहता है। जो निम्नांकित हैं —

- समूह के सदस्यों की आवश्यकताएँ धीरे-धीरे विशिष्ट होती चली जाती हैं।
- सदस्यों की बदलती हुई नयी आवश्यकताओं के अनुसार समूह अपने-आप में परिवर्तन लाने में समर्थ नहीं हो पाता है।
- समूह अपने सदस्यों की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करने में स्वयं को असमर्थ पाता है।

इन कारणों से समूह अपने कुछ साधारण सदस्यों को नये समूह का सदस्य बनने के लिए प्रेरित करता है परंतु वह अपने प्रभावकारी सदस्यों को किसी भी कारण से किसी अन्य समूह का सदस्य बनने की प्रेरणा नहीं देता। वह ऐसे सदस्यों को पूरी ताकत के साथ रोक कर रखने का प्रयास करता है। क्योंकि प्रभावकारी सदस्यों के समूह छोड़ने या अन्य समूहों से जुड़ने के कारण मूल समूह का अस्तित्व ही खतरे में पड़ सकता है।

स्पष्ट है, कि समूह अपने सदस्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के कार्य करते हैं। इन कार्यों से ही समूह का अस्तित्व एवं सदस्यों की गरिमा बनी रहती है। उनकी एक विशेष पहचान बन पाती है।